IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

जनजाति क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्रोत्साहन की विभिन्न योजनाएं एवं उनका आकलन

डॉ. राजकुमार कुशवाहा[1] एंव डॉ. जेंदलाल सिंह[2]
पुस्तकालयध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय, रामपुर नैकिन, सीधी, म.प्र[1]
शासकीय महाविद्यालय, सिहावल, सीधी, म.प्र.[2]

सारांशः– जनजाति परिवार अथवा परिवारों के समूहों का एक संग्रह है जिसका एक ही सामान्य नाम होता है जिसके सदस्य एक ही भू–क्षेत्र में निवास करते है एक भाषा बोलते हैं और विवाह, वृत्ति, शिक्षा, उच्चशिक्षा या व्यवसाय के प्रति कुछ निषेधों का पालन करते हैं तथा उनमें परस्पर आदान–प्रदान एवं दायित्यों की पारस्परिकता की एक सुनिष्चित व्यवस्था विकसित हो गई है। जनजातियों प्रारंभ से ही दूरस्थ एवं निर्जन स्थानों पर निवास करते हैं परिणाम स्वरूप इन पर षिक्षा एवं उच्च षिक्षा का बहुत कम प्रभाव पड़ा। इसी कारण ये सदैव ही पुस्तकालय के नवीन साधनों के आभावों से ग्रस्त रहे है। इसलिए जनजातियों की अपनी अलग एवं विषिष्ट पहचान बनी रही है। आज भी दूरस्थ स्थानों पर जनजातियों को सैंकड़ों वर्ष पूर्व की सभ्यता में षिक्षा और जीवन यापन करते हुए देखा जा सकता है।

डॉ.बी.आर.अम्बेडकर ने 25 नवंबर, 1949 को संविधान सभा में अपने भाषण में कहा था कि हम 26 जनवरी 1950 को एक ऐसे जीवन में पदार्पण करने जा रहे हैं, जो अंर्तविरोधियों से भरा हुआ है। राजनीति की दृष्टि से हममें समानता होगी किन्तु सामाजिक, आर्थिक जीवन में असमानता के शिकार होंगे। राजनीति में हम एक आदमी के लिये एक वोट और एक वोट का मूल्य सिद्वान्त अपनायेंगे। किन्तु हमारे सामाजिक, आर्थिक जीवन में हम अनेक सामाजिक और आर्थिक ढांचे की वजह से हर व्यक्ति का एक ही मूल्य, सिद्धान्त से वंचित रहेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रथम पंचवर्षीय योजनाकाल से लेकर ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजनाकाल तक कई नवीन योजनाएं प्रारम्भ की गई। इसके अन्तर्गत माध्यमिक स्तर से लेकर व्यावसायिक शिक्षा तक विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, छात्रावास एवं आश्रमों की सुविधा, शैक्षणिक शुल्क एवं अन्य परीक्षा शुल्कों की प्रति प्रावीण्य छात्रवृत्ति, छात्रगृह योजना, संस्थाओं में पाठ्य पुस्तकों का प्रदाय, विद्यार्थी कल्याण आदि लाभ प्रदान किया जा रहा है। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना काल के अन्त तक मध्य प्रदेश में शिक्षा की विभिन्न योजनाओं पर लाखों रूपये व्यय हुये।

उच्च षिक्षा विभाग केवल ज्ञान और कौषल का ही विकास नही करता बल्कि शिक्षित व्यक्ति को राष्ट्र निर्भर बनाने का भी मार्ग प्रषस्त कर, समाज के स्तर को ऊपर उठाने और राष्ट्र निर्माण में उनकी भागीदारी के अवसर प्रदान करता है। शासकीय विष्वविद्यालय, महाविद्यालयों के लिए भवन निर्माण, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को निःषुल्क पुस्तकें और स्टेषनरी का प्रदाय, लाइब्रेरी आटोमेषन, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पुस्तकालय विकास एवं आधुनिक तकनीक से षिक्षण व्यवस्था जैसी आदि योजनाए संचालित की गई है।

संदर्भ सूची

[1]. बघेल, डी.एस. सामाजिक अनुसंधान, साहित्य भवन प्रकाषन, आगरा

[2]. त्रिवेदी डॉ. आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (2000) रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कालेज बुक डिपों, जयपुर

[3]. मिश्रा, लक्ष्मी (1982), मध्यप्रदेश में षिक्षा, मध्यप्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

[4]. Journal of Higher Education, 11: 111-16.

[5]. चतुर्वेदी, देवीदत्त (1995), पुस्तकालय और समाज, हिमालय प्रकाषन हाउस, आगरा

[6]. www.mhrd.gov.in

[7]. www.mp.gov.in/highereducationmp

[8]. www.tribal.mp.gov.in

[9]. www.ugc.ac.in (11th Plan)